Research Ambition
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
Web: www.researchambition.com, Email: publish2017@gmail.com
Impact Factor: 3.071 (IIJIF)
ISSN: 2456-0146
Vol. 1, Issue-IV
Feb. 2017
e-ISJN: A4372-3068

पौराणिक दृष्टि से गंगा नदी की आर्थिक महत्ता

सरोज कुमारी
शोध-छात्रा (पी0एच-डी0)
संस्कृत-विभाग
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय
शिमला-171005

सारांश

जल प्रत्येक पदार्थ की समृद्धि और वृद्धि के लिए सहायक होता है, उसी से ही समस्त पदार्थ पूर्णता प्राप्त करते हैं। जल के अभाव में किसी भी पदार्थ की चेतना शक्ति नष्ट हो जाती है, इनमें नदियाँ ही सब पदार्थों को अपने जल से सिञ्चित करके नई चेतना लाती हैं। गंगा नदी भारतीय लागों के लिये धार्मिक रूप से ही महत्त्वपूर्ण नहीं है अपितु इसका आर्थिक महत्त्व भी है। इसके द्वारा खेती की सिंचाई, इसके ऊपर बने बांधों से प्राप्त विद्युत, इसके जलमार्ग से आवागमन, व्यापार तथा पर्यटन भारत की आर्थिक व्यवस्था को सुदृढ़ बनाते हैं। इसकी कई सहायक नदियाँ हैं जो भारत के कई राज्यों के लिये सिंचाई का महत्त्वपूर्ण स्त्रोत है। इन राज्यों में कई तरह की फसलें उगायी जाती हैं जो आर्थिक रूप से मदद करती हैं। इस नदी पर पर्यटन पर आधारित आय के साधन भी हैं। इसके तट पर प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर कई पर्यटन स्थल हैं जो ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं तथा आय का साधन भी हैं। गंगा तट पर कई तीर्थस्थल भी हैं - हरिद्वार, इलाहाबाद एवं वाराणसी जो महत्त्वपूर्ण तीर्थस्थलों में विशेष स्थान रखते हैं।

महाभारत के अनुसार कहा गया है कि युधिष्ठर ने भगवान् नर-नारायण का स्थान देखा था जो देवताओं तथा देवर्षियों से पूजित था और भगीरथी गंगाजी से सुशोभित था।[1] उत्तम तीर्थों से सुशोभित भगीरथी गंगा शीतल जल बहाने वाली हैं उसमें सुन्दर कमल खिले रहते हैं। इसके घाट मणियों और मूँगों से भरे रहते हैं। अनेक प्रकार के वृक्ष उसके तट की शोभा को बढ़ाते हैं तथा यहाँ के दिव्य पुष्पों से हृदय हर्षित हो जाता है।[2]

भगीरथी गंगा के स्थान का दर्शन करते हुये नरों में श्रेष्ठ पाण्डव वहाँ पर सुखपूर्वक सब ओर घूमें थे। वहाँ पर ब्रह्मर्षियों द्वारा सेवित दिव्य वृक्ष भी था, जो फलों से मधु की धारा बहाने वाला था, वहाँ पर पाण्डवों ने ब्राह्मणों के साथ निवास किया था।[3] वहाँ पर मैनाक पर्वत था जो सुवर्णमय शिखरों से तथा अनेक प्रकार के पक्षियों से शोभित था। इसके अतिरिक्त वहाँ पर शीतल जल से सुशोभित बिन्दुसर नामक तालाब था।[4] गंगा जी का दर्शन करके पाण्डवों ने देवर्षि सेवित भगीरथी के पवित्र जल में स्थित होकर देवताओं, ऋषियों तथा पितरों का पवित्रता के साथ तर्पण किया था।[5] वनगमन के समय पाण्डवगण रथों पर बैठकर गंगाजी

Research Ambition
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
Web: www.researchambition.com, Email: publish2017@gmail.com
Impact Factor: 3.071 (IIJIF)
ISSN: 2456-0146
Vol. 1, Issue-IV
Feb. 2017
e-ISJN: A4372-3068

के किनारे प्रमाणकोटि नामक महान् तट के समीप गये तथा संध्या होते-होते उस तट के निकट पहुँचकर वीर पाण्डवों ने पवित्र गंगाजल का स्पर्श, आचमन तथा संध्यावन्दन आदि करके वहीं पर रात्रि व्यतीत की थी[6] तथा रात को केवल जल पीकर ही रहे।[7]

गंगा एवं यमुना का परमपवित्र संगम सम्पूर्ण जगत् में विख्यात है तथा बड़े ऋषि इसका सेवन करते हैं।[8] यहाँ पर सब प्राणियों के आत्मा ब्राह्मजी ने यहाँ पर यज्ञ किया था, जिस प्रकृष्ट याग से ही उस स्थान का नाम प्रयाग हो गया।[9] जो आज एक पवित्र संगमस्थल तीर्थ के नाम से विख्यात है। यहाँ पर महर्षि अगस्त्य का आश्रम था अर्थात् गंगा तट पर तपस्वियों क निवास स्थल भी रह चुके हैं[10] तथा यहाँ पर मतंग ऋषि का महान् एवं उत्तम आश्रम था जो आज केदारतीर्थ से विख्यात है।[11]

नदियाँ मनुष्य को सब तरफ से समृद्ध करने में सहायक होती हैं। इस देश में सैंकड़ों नदियाँ - उपनदियाँ बहती हैं जिनमें स्नान करके मनुष्य सब पापों से मुक्त हो जाता है तथा पुण्य की प्राप्ति करता है।[12]

गंगा आदि नदियों की महत्ता का प्रमाण है कि साधारण से साधारण व्यक्ति भी सामान्य स्नान करते समय सभी अर्चनीय नदियों का स्मरण करता है कि आप सब नदियाँ यहाँ आकर अपना सानिध्य प्रदान करें, जिससे उसे शुद्धता की प्राप्ति हो सके।[13]

नदियों को स्वास्थ्य की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण माना गया है, क्योंकि नदियों का जल स्वच्छ होता है, इसलिए ये निवास योग्य भी मानी गई हैं।[14] नदियों पर कई देशों के निवास स्थल भी रहे हैं। जैसे कुरु, पाँचाल, मध्यदेशादि के रहने वाले पूर्वदेशवासी, कामरूप के निवासी, पुण्ड्र, कलिंग, मगध और दक्षिणात्य लोग, उपरान्त देशवासी, सौराष्ट्र, शूर, आभीर पारियात्र निवासी, सौबीर, सैन्धव, हूण, साल्व, कौशल, मालव, माद्र अम्बष्ठ और पासीरगणादि सभी के निवास नदियों के तट पर ही रहे।[15]

नदियों द्वारा जल उपलब्ध होने से लोगों को फसलें उगाकर अच्छी आय प्राप्त होती है, इस प्रकार किसी भी देश की अर्थव्यवस्था नदियों द्वारा सुदृढ़ होती है। जल से सम्बन्धित वृक्ष, फल-फूल, ग्रामीण पशुओं से व्याप्त वे तटीय भाग धन-धान्य से सम्पन्न लोगों के निवास स्थान हुये हैं।[16] इससे खुशहाल पौराणिक समाज का प्रमाण मिलता है। अग्नि पुराण में कृषि के लिए समय विशेष का महत्त्व भी बताया है। स्वाति, उतरा, रोहिणी, मृगशिरा, मूलपुनर्वसु, पुण्य, श्रवण और हस्ता नक्षत्र में कृषि कार्य करने से फसल में वृद्धि होती है।[17]

मत्स्यपुराण के अनुसार शाकद्वीप में गङ्गा सात प्रकार की बतलाई गई है।[18] कल्याणमय जल से परिपूर्ण एवं महान् भाग्यशालिनी ये सातों गंगायें शाकद्वीप में प्रत्येक वर्ष सभी प्राणियों को पवित्र करती हैं। दूसरे बड़े-बड़े नद, नदियाँ और सरोवर भी इन्हीं गंगा की धाराओं में आकर मिलते हैं, जिनके कारण ये सभी अथाह जल बहाने वाली हैं।[19] गंगा की सहायक नदियों के नाम और परिमाण की गणना नहीं की जा सकती। ये सभी श्रेष्ठ नदियाँ पुण्यतोया हैं। इनके तट पर निवास करने वाले जनपदवासी

Research Ambition
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
Web: www.researchambition.com, Email: publish2017@gmail.com
Impact Factor: 3.071 (IIJIF)
ISSN: 2456-0146
Vol. 1, Issue-IV
Feb. 2017
e-ISJN: A4372-3068

सदा हर्षपूर्वक इनका जल पीते हैं। इनके तट पर विश्व विख्यात - शान्तमय, प्रमोद, शिव, आनन्द, सुख, क्षेमक और नव - ये सात देश हैं। इन देशों के निवासी नीरोग, बलवान् और मृत्युरहित होते हैं।[20]

गंगा की सात धारायें जो बिन्दुसर से निकली हुई हैं, वे सब ओर से उन म्लेच्छप्राय देशों को सींचती हैं जो पर्वतीय कुकुर, रौध्र, बर्बर, यवन, खस, पुलिन्द, कुलत्थ, अङ्गलोक्य, और वर नाम से जाने जाते हैं। गंगा हिमवान् पर्वत को दो भागों में विभक्त कर दक्षिणसमुद्र में प्रवेश करती है[21] तथा चक्षु नदी जो गंगा की ही धारा है - वीरमरु, कालिक, शूलिक, तुषार, बर्बर, कार, पह्लव, पारद और शक - इन देशों को आप्लावित कर समुद्र में मिल गयी है।[22] इसके अतिरिक्त मङ्गलमयी गंगा - गन्धर्व, किन्नर, यक्ष, राक्षस, विद्याध नाग, कलापग्रामवासी जन, किम्पुरुष, किरात, पुलिन्द, कुरु, भारत, पाञ्चाल, कौशिक, मत्स्य (विराट्), मगध, अङ्ग, उत्तरसुह्य, वङ्ग और ताम्रलिप्त इत्यादि आर्य देशों को पवित्र करती हुई बहती है। इस प्रकार से गंगा नदी हिमालय से निकलकर विन्ध्यपर्वत से अबरूद्ध होकर पूर्व की ओर आगे बढ़ती हुई दक्षिणसमुद्र में मिल जाती है।[23]

ब्रह्मवैवर्तपुराण के अनुसार गंगा अमूल्य रत्नों तथा श्रेष्ठ मणियों की खान मानी जाती है। इसके तट पर यौवन नाग कन्यायें क्रीड़ा किया करती हैं।[24] इसका तीर मनोहर एवं अनेक प्रकार के रत्नों का कोष माना जाता है।[25] इस पवित्र नदी के तट पर भागीरथ ने प्रचुर दक्षिणा वाले बहुत से यज्ञों का अनुष्ठान करवाया था।[26] अर्थात् यहाँ पर आज भी लोगों द्वारा दक्षिणा वाले कई अनुष्ठान करवाये जाते हैं। गंगा तट पर सभी पापों की मुक्ति होती है तथा वहाँ पर सब प्रकार की सम्पदाओं की वृद्धि होती है।[27]

राजा कुरु ने अपनी समस्त इच्छाओं की पूर्ति हेतु नदियों के बीच के क्षेत्र में कृषि करके अपने राज्य को समृद्ध किया था।[28] जल का संरक्षण करके उसने उत्पादन को बढ़ाया तथा सिंचाई द्वारा खेती की।

नदियों के जल में औषधीय गुण पाये जाते हैं। नदी के तटों पर पाई जाने वाली जड़ी-बूटियों का कुछ न कुछ अंश जल में अवश्य होता है, जिससे मनुष्य आरोग्यता को प्राप्त करके हृष्ट-पुष्ट रहता है। स्वास्थ्य समृद्धि के लिए नदियाँ प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से सहायक हैं। ये सभी पदार्थों को प्रदान करती हैं।[29]

निष्कर्ष

गंगा नदी का आर्थिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण योगदान है। इसका स्वच्छ जल स्वास्थ्य की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण माना गया है, इसीलिये इसे निवास स्थल योग्य भी माना है। इसके तट पर कई देशों के निवास स्थल हैं तथा यहाँ निवास करने वाले जनपदवासी हर्षपूर्वक इसका जल पीते हैं, जिससे ये नीरोगी, बलवान् तथा मृत्युरहित होते हैं। गंगा अनेक देशों को सींचती है। यह हिमवान् पर्वत को दो भागों में विभक्त करके दक्षिण समुद्र में प्रवेश करती है। यह कई अमूल्य रत्नों की खान भी मानी गयी है। इसके

Research Ambition
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
Web: www.researchambition.com, Email: publish2017@gmail.com
Impact Factor: 3.071 (IIJIF)
ISSN: 2456-0146
Vol. 1, Issue-IV
Feb. 2017
e-ISJN: A4372-3068

अतिरिक्त इसके तट पर कई यज्ञों का भी अनुष्ठान किया जाता है, जिसमें प्रचुर दक्षिणा भी दी जाती है। अतः गंगा नदी का आर्थिक दृष्टिकोण से इस देश के लिये हर प्रकार का योगदान रहा है।

संदर्भ ग्रन्थ-सूची

1. तत्रापश्यत धर्मात्मा देवदेवर्षिपूजितम्।
नरनारायणस्थानं भगीरथ्योपशोभितम्।। महाभारत, वनपर्व, 145.41
2. भगीरथीं सुतीर्थां च शीतां विमलपङ्कजाम्।
मणिप्रवालप्रस्तारां पादपैरुपशोभिताम्।।
दिव्यपुष्पसमाकीर्णां मनः प्रीतिक्विर्धिनीम्। महाभारत, वनपर्व, 145.50-51
3. पश्यन्तस्ते नरव्याघ्रा रमिरे तत्र पाण्डवाः।
मधुस्त्रवफलं दिव्यं ब्रह्मर्षिगणसेवितम्।।
तदुपेत्य महात्मानस्तेऽवसन् ब्राह्मणैः सह। महाभारत, वनपर्व, 145.42-43
4. आलोकयन्तो मैनाकं नानाद्विजगणायुतम्।
हिरण्यशिखरं चैव तच्च बिन्दुसरः शिवम्।। महाभारत, वनपर्व, 145.44
5. तस्मिन् देवर्षिचरिते देशे परमदुर्गमे।
भागीरथीपुण्यजले तर्पयांचक्रिरे तदा
देवनृर्षींश्च कौन्तेयाः परमं शौचमास्थिता।। महाभारत, वनपर्व, 145.52-53
6. निवृत्तेषु तु पौरेषु स्थानास्थाय पाण्डवाः।
आजग्मुर्जाह्नवीतीरे प्रमाणाख्यं महावटम्।।
ते तं दिवसशेषेण वटं गत्वा तु पाण्डवाः।
ऊषुस्तां रजनीं वीराः संस्पृश्य सलिलं शुचि।। महाभारत, वनपर्व, 1.41-42
7. उदकेनैव तां रात्रिमूषुरते दुःखकर्षिताः।। महाभारत, वनपर्व, 1.43
8. पवित्रमृषिभिर्जुष्टं पुण्यं पावनमुत्तमम्।
गंगायमुनयोर्वीर संगमं लोकविश्रुतम्।। महाभारत, वनपर्व 87.18
9. यत्रायजत भूतात्मा पूर्वमेव पितामहः।
प्रयागमिति विख्यातं तस्माद् भरतसत्तम्।। महाभारत, वनपर्व, 87.19
10. अगस्त्यस्य तु राजेन्द्र तत्राश्रमवरो नृप। महाभारत, वनपर्व, 87.20
11. पवित्रो मंगलीयश्च ख्यातो लोके महात्मनः।
केदारश्च मतंगस्य महानाश्रम उत्तमः।। महाभारत, वनपर्व, 87.24-25
12. आंसा नद्युपनद्यश्चशतशः द्विजपुगवः।
सर्वपापहराः पुण्या स्नानदानादि कर्मसु।। कूर्म पुराण, 45.38,42
13. गङ्गे च यमुनैचैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेऽस्मिन्संनिधि कुरु।। ब्रह्मवैवर्त पुराण, प्रथम खण्ड, 10.67
14. आसां पिबन्ति सलिलं वसन्ति संहिताः सदा।
समीपतो महाभागा हृष्टपुष्ट जनाकुलाः।। विष्णु पुराण, द्वितीय अंश, 3.18
15. तस्विमे कुम्पाञ्चाला मध्यदेशादयो जनाः।
पूर्वदेशादिकाश्चैव कामरुप निवासिंनः।।

Research Ambition
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
Web: www.researchambition.com, Email: publish2017@gmail.com
Impact Factor: 3.071 (IIJIF)
ISSN: 2456-0146
Vol. 1, Issue-IV
Feb. 2017
e-ISJN: A4372-3068

पुण्ड्रा कलिङ्गा मगधा दक्षिणाद्याश्च सर्वशः।
तथा परान्ताः सौराष्ट्राः शूरभीरास्तथार्बुदाः।।
कारूषा मालवाश्चैव पारियात्र निवासिनः।
सौवीरा सैन्धवः हूणाः साल्वा कोशलवासिनः।।
माद्रारामास्तथाम्बष्ठाः पारसीकादयस्तथा। विष्णु पुराण, द्वितीय अंश, 3.15–16 ; कूर्म पुराण, 45.39–42

16. नदी जलैः परिवृत पर्वतश्चाम्रसंनिभैः।
सर्वधातु विचित्रैश्च मणि विद्रुम भूषितैः।
अन्यैश्च विविधाकारैः रम्यैर्जनपदैस्तथा।
वृक्षैः पुष्पफलोपेते सर्वतो धनधान्यवान्।
नित्यं पुष्पफलोपेतेः सर्वरत्नसमावृतः।।
आवृतः पशुभिः सर्वैः ग्राम्यारण्यै सर्वशः।। मत्स्य पुराण, 122.45–48

17. अनिलोत्तररोहिण्यां मृग मूल पुनर्वसौ।
पुण्यश्रवण हस्तेषु कृषि कर्म्म समाचरेत्।। अग्नि पुराण, 121.45–46

18. गंगा सप्तविधाः स्मृताः। मत्स्य पुराण, 122.29

19. एताः सप्त महाभागाः प्रतिवर्ष शिवोदकाः।
भावयन्ति जनं सर्वं शाकद्वीपनिवासिनम्।।
अभिगच्छन्ति ताश्चान्या नदनद्यः सरांसि च।
बहूदकपरिस्त्रावा यतो वर्षति वासवः।। मत्स्य पुराण, 122.34–35

20. तासां नु नामधेयानि परिमाणं तथैव च।
न शक्यं परिसंख्यातुं पुण्यास्ताः सरिदुत्तमाः।।
ताः पिबन्ति सदा हृष्टा नदीर्जनपदास्तु ते।
एते शान्तमयाः प्रोक्ताः प्रमोदा ये च वै शिवाः।।
आनन्दाश्च सुखाश्चैव क्षेमकाश्च नवैः सह।
आरोग्या बलिनश्चैव सर्वे मरणवर्जिताः।। मत्स्य पुराण, 122.36–39

21. प्रसूताः सप्त नद्यस्तु शुभा बिन्दुसरोद्भवाः।
तान् देशान् प्लावयन्ति स्म म्लेच्छप्रायांश्च सर्वशः।
सशैलान् कुकुरान् रौध्रान बर्बरान् यवनान् खसान्।।
पुलिन्दांश्च कुलत्यांश्च अङ्गलोक्यान् वरांश्च यान्।
कृत्वा द्विधा हिमवन्तं प्रविष्टा दक्षिणोदधिम्।। मत्स्य पुराण, 121.42–44

22. अथ वीरमरूंश्चैव कालिकांश्चैव शूलिकान्।
तुषारान् बर्बरान् कारान् पह्लवान् पारदाञ्छकान्।। मत्स्य पुराण, 121.45

23. गन्धर्वान् किंनरान् यक्षान् यक्षोविद्याधरोरगान्।
कलापग्रामकांश्चैव तथा किम्पुरुषान् नरान्।
किरातांश्च पुलिन्दांश्च कुरून् वै भारतानपि।।
पाञ्चालान् कौशिकान् मत्स्यान् मागधाङ्गांस्तथैव च।
सुह्मोत्तरांश्च वङ्गाश्च ताम्रलिप्तांस्तथैव च।।
एताञ्जनपदानार्यान् गङ्गा भावयते शुभा।
ततः प्रतिहता विन्ध्ये प्रतिष्ठा दक्षिणोदधिम्।। मत्स्य पुराण, 121.48–51

24. आकारमूल्यारत्नानां मणीन्द्राणाञ्च सन्ततम्।

Research Ambition
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Access & Indexed)
Web: www.researchambition.com, Email: publish2017@gmail.com
Impact Factor: 3.071 (IIJIF)
ISSN: 2456-0146
Vol. 1, Issue-IV
Feb. 2017
e-ISJN: A4372-3068

नागकन्याश्चतत्तीरेक्रीडन्ति स्थिर यौवनाः।। ब्रह्मवैवर्त पुराण, द्वितीय खण्ड, 75.42

25. नानारत्नाकरं दिव्यतत्तीरं सुमनोहरम्।। ब्रह्मवैवर्त पुराण, द्वितीय खण्ड, 75.44

26. गंगा यत्र नदी पुण्या यस्यास्तीरे भागीरथः।
अयजयत् तत्र बहुभिः क्रतुभिर्भूरि दक्षिणैः।। महाभारत, वनपर्व, 87.14

27. सर्वपापनिहन्तृणां सर्वसंपद्विवर्धनम्। ब्रह्म पुराण, द्वितीय खण्ड, 6.18

28. तममन्यत राजर्षिरिदं क्षेत्रं महाफलम्।
करिष्यामि कृषिष्यामि सर्वान्कामान् यथोप्सितान् ।। वामन पुराण, 22.21

29. येऽर्था नित्या ये विनश्यन्ति चान्ये येऽर्थाः स्थूला ये तथा सन्ति सूक्ष्माः।
ये वा भूमौ येऽन्तरिक्षेऽन्यतो वा तेषां देवीत्वत एवोपलब्धि।। वामन पुराण, 32.21